पृ - 1.

27.4.20.

स्नातक कला भाग 1

विषय - हिन्दी रचना - व्याकरण

पाठ - हिन्दी के उपसर्ग और प्रत्यय

परिभाषा - 'उपसर्ग' उस शब्दांश या अव्यय को कहा जाता है जो किसी शब्द के पहले आकर विशेष अर्थ प्रकट करता है।

जैसे 'हार' मूल शब्द में 'प्र' उपसर्ग जब पहले जुड़ जाता है तब 'प्रहार' शब्द बन जाता है उसका विशेष होता है 'मारना'। जैसे 'हार' का अर्थ हारना होता है। इसी तरह 'अन' उपसर्ग 'बन' शब्द के पहले जब आ जाता है तब शब्द 'अनबन' बन जाता है जिसका अर्थ मनमुटाव होता है। यह अलग बात है कि उपसर्गों का कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं होता, पर जब शब्दों के पहले जुड़ाव होता है तब एक नया ही अर्थ बोध में आता है। कुछ उपसर्गों के जुड़ने से नया अर्थ या परिवर्तन नहीं भी होता है, पर शब्द के पहले के अर्थ में तेजी आती है उदाहरण स्वरूप 'भ्रमण' शब्द में जब परि उपसर्ग लगता है तब भ्रमण में गति या तेजी आती चारो ओर घूमना अर्थ निःसृत होता है। इस प्रकार उपसर्गों के प्रयोग से शब्दों की तीन स्थितियाँ बनती हैं —

(क) शब्द के अर्थ में एक नयी विशेषता आती है।

(ख) शब्द का अर्थ प्रतिकूल हो जाता है।

(ग) शब्द के अर्थ में कोई विशेष अन्तर नहीं होता, बल्कि अन्तर करने की कोशिश होती है।

एक बात और शब्दों में अक्षरों का समूह होता है और वाक्य में उसका अर्थ स्वतंत्रतापूर्वक प्रयुक्त होता है, जबकि उपसर्ग भी अक्षरों का समूह होते हुए भी अपना कोई स्वतंत्र अर्थ नहीं रखता। उपसर्ग शब्द को तोड़ें तो उप का अर्थ निकट तथा सर्ग का अर्थ सर्जन करना है। मतलब यह कि यह शब्द के पास बैठकर नया सृजन करता है।

पेज - 2

प्रत्यय :— उपसर्गों की तरह ही प्रत्यय अविकारी शब्दांश होता है, पर यह मूल शब्द के अन्त में लगकर उसके अर्थ में परिवर्तन ला देता है।

प्रत्यय दो शब्दों से बना है — प्रति + अय। प्रति का अर्थ 'साथ में पर बाद में' होता है अय का अर्थ 'चलनेवाला' है। इस प्रकार प्रत्यय का अर्थ शब्दों के बाद में चलनेवाला या लगनेवाला है।

जैसे 'मीठा' शब्द में आई प्रत्यय लगाने से 'मिठाई' शब्द बनता है। स्पष्ट है मीठा से चलता अर्थ मिठाई का हो जाता है।

प्रत्यय के दो प्रकार होते हैं — कृदन्त और तद्धित। क्रिया या धातु के अन्त में कृत् प्रत्यय लगाने से जो शब्द बनते है वे ही कृदन्त कहे जाते हैं। ध्यातव्य यह है कि हिन्दी में क्रियाओं के अन्त का 'ना' हटा देने से जो अंश रह जाता है वही धातु है।

जैसे :— कृत् प्रत्यय – वाला, क्रिया – गाना से गानेवाला शब्द बन जाता है

इसी हार – होना – होनहार

ऐया – खेना – खेवैया होता है।

ध्यातव्य यह भी कि ~~इसी प्रकार~~ कृत् प्रत्यय ~~के~~ धातु के अन्त में जुड़ने से बने हुए शब्द संज्ञा और विशेषण दोनों हो सकते हैं

जैसे — कृत् प्रत्यय – धातु – शब्द

अक – कृ – कारक } संज्ञा शब्द बने हैं।

ति – शक् – शक्ति

पर — क्त – भू – भूत } विशेषण शब्द बने हैं।

क्त – मद् – मत्त

मान – विद् – विद्यमान

कृदन्त के दो भेद हैं — विकारी और अविकारी

इन पर अगले वर्ग में चर्चा होगी

(मेधा शर्मा, हिन्दी विभाग
एस. एस. कॉलेज, जहानाबाद
27.4.2020